देकार्त : आधुनिक युग का प्रतीक

रेने देकार्त का जन्म 1596 ईस्वी में, प्लेटो से करीब 2000 साल बाद, फ्रांस में हुआ था। देकार्त के दर्शन से पश्चिमी दर्शन के आधुनिक युग का प्रारंभ माना जाता है। देकार्त एक ऐसा दार्शनिक था जिसने अपने पूववर्ती दार्शनिकों के ज्ञान को स्वीकार नहीं किया और उसने दर्शन के एक नए ढांचे का निर्माण किया। उसने दर्शन की दुनिया में एक नई नींव रखी। लेकिन इससे पहले यह जानना जरूरी है कि इस 2000 साल के अन्तराल में पश्चिमी दुनिया के दार्शनिक चिन्तन में क्या कार्य हुआ? देकार्त से पहले लम्बे समय तक पश्चिमी दुनिया में ईसाई धर्म का प्रभुत्व रहा और यह माना जाता था कि बाईबिल में जो लिखा है वही परम सत्य है। और जिसे स्वयं ईश्वर ने कहा है वह गलत कैसे हो सकता है। उस पर संदेह करना पाप है। हम जानते हैं कि यह वह समय था जब कोई भी ईसाई धर्म या बाईबलीय ज्ञान के खिलाफ बोलने की कोशिश नहीं करता था और यदि करता भी था तो उसे दण्ड दिया जाता था और कई बार मार भी दिया जाता था। गैलीलियो के बारे में आप सभी ने सुना होगा। गैलिलीयो ने अपने अध्ययन के आधार पर यह कहने की कोशिश की थी कि सूरज पृथ्वी के चक्कर नहीं लगाता बल्कि पृथ्वी सूरज के चक्कर लगाती है। यह बात बाईबलीय ज्ञान के खिलाफ जाती थी क्योंकि बाईबिल में यह माना गया है कि पृथ्वी इस ब्रह्मण्ड के केन्द्र में है और सूरज उसके चक्कर लगाता है। अतः ईसाई धर्म गुरुओं ने गैलीलियो को दण्ड देने की धमकी दी गई और उसे माफी मांगनी पड़ी। ऐसे समय में देकार्त ने अपने चिन्तन में ज्ञान प्राप्त करने के लिए 'संदेह की विधि' को अपनाया और उसने कहा कि जिस किसी चीज पर भी संदेह किया जा सकता है; उस पर संदेह किया जाना चाहिए। जब इंसान के मन में संदेह करने की प्रक्रिया प्रारंभ होती है तो उससे शायद ही कोई चीज बची रहे।

ज्ञान अर्जित करने के लिए संदेह की विधि को अपनाकर देकार्त के चिन्तन ने अप्रत्यक्ष रूप से ईसाई धर्म और बाईबलीय ज्ञान के प्रभुत्व को चुनौती दी। इस मायने में उन्हें आधुनिक युग का प्रतीक माना जाता है। देकार्त स्वयं एक श्रद्धालु ईसाई थे। वे धर्म के मामलों में चर्च के प्रभुत्व को मानते थे लेकिन वे यह भी मानते थे कि दर्शन और विज्ञान का क्षेत्र चर्च की दखल

से स्वतंत्र होना चाहिए। विज्ञान और दर्शन की स्वतंत्रता को लेकर उनके मन में हमेशा ही अन्तर्द्वन्द्व रहा।

गैलीलियो के चर्च के विरुद्ध बात करने का नतीजा वे देख चुके थे इसलिए अपने डर और अन्तर्द्वन्द्व को उन्होंने अपनी एक पुस्तक में कुछ इस तरह लिखा है, ''अपनी वैयक्तिक सीमाओं को पूरी तरह से ध्यान में रखते हुए मैं कोई भी अधिकारपूर्ण दावा नहीं करता। मैं अपने सारे विचारों के प्रामाण्य के लिए कैथोलिक चर्च के प्रभुत्व को स्वीकार करता हूं और मेरे से ज्यादा समझदार व्यक्तिओं के निर्णय को मानता हूं। मैं चाहूंगा कि मेरी किसी भी धारणा में कोई भी व्यक्ति तब तक विश्वास न करे जब तक कि वह उसे स्पष्ट और अकाट्य तर्क के आधार पर स्वयं सत्य नहीं मान ले।'' धर्म के इस आतंक के समय में देकार्त संदेह को ज्ञान प्राप्त करने की विधि बना रहे थे जो सीधे–सीधे ईसाई धर्म के खिलाफ खड़ी थी।

000